भूमिका

हिन्दी कथासाहित्यको लोकप्रियताकी दृष्टिसे आकाशकी ऊँचाईतक पहुँचानेवाली आज की सर्वाधिक लोकप्रिय लेखिका है - "शिवानी पाण्डे"।

शौकके तौरपर मैंने उनके "श्मशान चंपा" "मायापुरी" "स्वयंसिध्दा" आदि उपन्यास पढ़े थे। पढ़ते-पढ़ते ऐसा लगाव पैदा हो गया कि फिर "कैंजा" "भैरवी" "सुरंगमा" "चौदह फेरे" "रतिविलाप" आदि एकसे एक बढ़कर सुंदर उपन्यास पढ़ लिये। इन उपन्यासोंका जैसे मुझपर जादू छा गया। सोचने लगी - कितने सुंदर उपन्यास! कैसी लुभावनी भाषा! कैसी दिलकश कथाएँ हैं ये! नारी मनके भावतरंगोंका कितना सूक्ष्म शब्दांकन है यह! जिनमें समाजका सही-सही चित्रांकन दिखाई देता है। ऐसे इस शुध्द-निर्मल कथा-पोखर के जलका आस्वाद हम भी क्योंन लेले?

शिवानी बहुविद, बहुश्रुत और सुज्ञ लेखिका है। नारी मनकी अतल गहराईयोंमें पहुँचकर उनके दुःखोंको, व्यथाओंको, जघन्य अपराधोंको या ममताकी रेशम गुत्थियोंको ऐसे मुखरित किया है, सुलझाया है कि जवाब नहीं। उनकी कथाओं में नारी चरित्रका हर पहलु अपने अनोखे रूपमें दिखाई देता है। जैसे अपने बुध्दिबलपर आय.ए.एस. बनी "अतिथि" की "जया" है। अपने बच्चोंके सिवाय जिसके जीवन का मकसद नहीं ऐसी "पूतोंवाली" है।

अध्यापिका होकर भी शराबी पतिके अत्याचार सहनेवाली सहिष्णु "राजलक्ष्मी" है। प्रेमीके लिए अपना जीवन न्योछावर करनेवाली "शोभा" है, "सुरंगमा" है। अद्भुतशक्ति प्राप्त 'विषकन्या'-

"कामिनी" तथा "कृष्णवेणी" है। एकसे एक बढ़कर लोक-विलक्षण तथा उलझनभरे चरित्र मुझे अभिभूत करगये।

शिवानीने घूम-फिरकर पूरा भारत देखा है। देश-विदेशकी यात्राएँ की हैं। कुमाउँ के ग्रामीण आँचलमें पली है। रविंद्रनाथके "शांतीनिकेतन" में पढी है। जैसे ग्रामीण जीवनको उन्होने नजदिकसे देखा है, वैसे ही "राजामहाराजाओंके महलोंको और वातावरणको भी देखा है, परखा है। उनके पिता "रामपुर" रियासतके "गृहमंत्री" थे, तब अंग्रेजी अफसर, देशी अफसर तथा नेता लोगोंके आत्मसम्मानहीन, झूठ, खोखले जीवनसे परिचित हो गई थी। व्यक्ति, समाज या वातावरण का यथार्थ चित्रण अपने साहित्यमें किया है। वास्तवताके कारण कथाएँ तथा उनके पात्र सजीव बन पड़े हैं। उन पात्रोंका भोगा हुआ यथार्थ हमारे दिलको कचोटता है, सदमा पहुँचाता है तथा हमदर्दी पहुँचाता है। कभी-कभी सन्न बना देता है।

लेखिकाका बहुभाषा ज्ञान, रोचक, सरस, सफल भाषाशैली उनकी सफलताका राज है। उन्होंने अपने साहित्यको प्रभावपूर्ण, आकर्षक बनानेके लिए कुमाउँनी, बंगला, गुजराथी, हिन्दी संस्कृत तथा तिब्बती भाषाओंका यथास्थान प्रयोग किया है। साहित्य, संगीत, नृत्य, स्थापत्य, वैद्यक, ज्योतिष तथा योगशास्त्रकी पर्याप्त जानकारी देकर हम दंग रह जाते हैं।

शिवानीजीके उपन्यासोंमें चित्रित बहुरंगीरंगीन चरित्रोंकी झाँकी प्रस्तुत करना, उन चरित्रोंकी समस्याओंका उजागर करना मेरे इस लघु प्रबंधका उद्देश है।

- प्रथम अध्यायमें शिवानीके जीवनका परिचय कराया है।
- दूसरे अध्यायमें जिस माहौलसे उन्हें लिखनेकी प्रेरणा मिली है - उस राजकीय, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिवेशका विवेचन है।
- तीसरे अध्यायमें अनमेल-विवाह, प्रेमविवाह उनके परिणाम तथा समस्याओंका चित्रण है।
- चौथे अध्यायमें नारी-जीवनके, आजकी बदलती परिस्थितियाँ, जीवनके क्रांतीकारी मोड़पर खड़ी नारीकी विविध समस्याओंका विशद चित्रण है। यही प्रबंध का "मेरुदण्ड" भी है।
- पाँचवे अध्यायमें पहाड़ी लोगोंका जीवन, रीतिरिवाज, धार्मिक सामाजिक प्रथाएँ और पहाड़ी लोगोंकी समस्याओंका सामान्यसा परिचय है।
- अन्तमें उपसंहार तथा संदर्भ-ग्रंथ सूची और लेखिकाकी ग्रंथ-संपदाका सिलसिलेवार निर्देशन है।

- ऋण निर्देश -

यह लघु-शोध प्रबंध लिखते समय मेरे गुरुवर्य महावीर महाविद्यालयके प्राचार्य डॉ.बी.बी. पाटीलजीने अनमोल मार्गदर्शन किया है, अत: मैं उनकी ऋणी हूँ।

मेरा श्रध्दास्थान मेरी माँ श्रीमती आनंदीबाई यादव और मेरे भाई सुरेश यादव की प्रेरणासे और सहयोगसे यह लघु-शोध प्रबंध लेखन कार्य पूरा कर सकी। उनके ऋणसे उऋण होना मेरे लिए असंभव है।

हमारे महात्मागांधी ज्युनिअर कॉलेजके प्राचार्य व्ही. डी.पाटील तथा सुपरवायझर श्री. पाटीलके बी.बी. दोनोंने मुझे समय-समयपर सहयोग दिया है, अत: उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ।

महावीर महाविद्यालयकी ग्रंथपाल सौ. एल,जे. भद्रे उन्होंने जो सहयोग दिया है, उसके लिए मैं उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

यह लघु-शोध प्रबंध अति-अल्प समयमें टंकलिखित करनेका कार्य, महालक्ष्मी टाईप-रायटिंग इन्स्टिटयूट, कोल्हापूरने किया है, इसलिए इस संस्थाके कर्मचारियोंके प्रति आभारी हूँ।

उन सभी ग्रंथ लेखकों और मेरे स्नेहीजनोंके प्रती कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होंने जाने-अनजाने मदद देकर मेरा लघु शोध प्रबंध पूर्ण करनेमें सहयोग दिया है। मेरी इस लेखन-कृतिमें होनेवाली त्रुटियोंको स्वीकार करते हुए मैं यह लघु-शोध प्रबंध आपके सामने प्रस्तुत करती हूँ।

प्रा. सौ. अ. वि. पाटील.,

शोधयात्रा

कोल्हापूर.

दि. ३०-८-१९९०